शिक्षक - रवि शंकर राम विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 23-11-2020, वर्ग - BA-III

प्रश्न-2- "विदेशी मध्यम वर्ग में नई आर्थिक नीति की प्रयोज्यता को पीछे की ओर मुड़ने, विफलता की स्वीकृति तथा पहले से विजित स्थिति त्याग देने के रूप में समझा गया।" क्या आप सहमत हैं? नवीन आर्थिक नीति की मुख्य उपलब्धियों का परिक्षण कीजिए।

"In foreign bourgeois circle at the time, the introduction of New Economic policy was hailed as a retreat, a recognition of failure and an abandonment of positions previously won." Do you agree? Examine the main achievement of New Deal policy.

उत्तर :- नवम्बर 1917 की बोल्शेविक क्रांति के बाद सोवियत सरकार ने 'नियंत्रित पूँजीवाद या राजकीय पूँजीवाद' की नीति अपनाई, ताकि आर्थिक प्रणाली में व्याप्त अराजकता एवं विघटन को समाप्त किया जा सके तथा राजनीतिक दृष्टि से सरकार सबल हो सके। इसके परिणामस्वरूप कृषि-उत्पादन का कार्य छोटे-छोटे उत्पादकों के नियंत्रण में चलाया गया। आधारभूत उद्योगों को छोड़कर, अन्य उद्योग-धन्धे निजी क्षेत्र में बने रहे; यद्यपि निजी उद्योगों पर ऊपर और नीचे दोनों ओर से नियंत्रण लागू किया गया। अनाज के व्यापार में सरकारी

एकाधिकार जारी रहा तथा विदेशी व्यापार को भी सरकारी नियंत्रण में ले लिया गया। जून 1918 में रूस में सोवियत सरकार को 'सामरिक साम्यवाद' गृहयुद्ध छिड़ जाने पर सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु की नीति अपनानी पड़ी। आपातकालीन परिस्थितियों के दबाव में उसके आर्थिक प्रयत्न 'उत्पादन एवं वितरण की केन्द्र-निर्देशित प्रणाली' तथा 'राज्य-संगठित वस्तु-विनिमय प्रणाली' की ओर अग्रसर होने लगे। सामरिक साम्यवाद का सहारा लेकर सरकार ने देशी और विदेशी शत्रुओं से सोवियत रूस को तो बचा लिया किन्तु इस नीति के आर्थिक परिणाम अत्यन्त भयावह सिद्ध हुए। सामरिक साम्यवाद की नीति ने सिद्ध कर दिया कि पूँजीवादी व्यवस्था का समाजवादी व्यवस्था में रूपान्तरण धीरे-धीरे ही संभव है। अतः गृह-युद्ध की समाप्ति पर सोवियत सरकार ने 'नवीन आर्थिक नीति' अपनाई। इस नीति के परिणामस्वरूप रूस में 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' विकसित हुई, जिसमें पूँजीवादी एवं समाजवादी

दोनों प्रकार के तत्व सम्मिलित थे।

मौरिस डॉब (Mauriee Dobb) के अनुसार, नवीन आर्थिक नीति की प्रयोज्यता को तत्कालीन विदेशी बुर्जुआ वर्ग ने लेनिन का पीछे की ओर (पूंजीवादी व्यवस्था की ओर) मुड़ना, उसके समाजवादी प्रयासों की विफलता का परिचायक तथा भूतकाल में (सामरिक साम्यवाद की अवधि) प्राप्त की गई स्थिति का परित्याग स्वीकार किया। स्वयं रूस के भीतर भी कुछ व्यक्तियों में इसे पीछे की ओर मुड़ना तथा विरोधी शक्तियों के समक्ष झुकना मानने की प्रवृत्ति विकसित होने लगी थी।" परन्तु वास्तविक स्थिति यह नहीं थी जैसा कि मौरिस डॉब ने लिखा है, " नई आर्थिक नीति के अन्तर्गत विकसित अर्थव्यवस्था में कोई आकस्मिक नवीनता नहीं थी, जिसका अनुसन्धान रातों-रात कर लिया गया हो। यह प्राचीन व्यवस्था पर प्रत्यक्ष प्रहार की असफलता द्वारा थोपी गई प्रणाली भी नहीं थी।" नवीन आर्थिक नीति द्वारा रूस में आर्थिक प्रणाली का मिश्रित रूप अपनाया गया था। जिसकी व्याख्या लेनिन ने 'संक्रमण कालीन मिश्रित व्यवस्था' के रूप में की और जिसे उसने 'राजकीय पूंजीवाद' बतलाया। लेनिन का

विश्वास था कि राजकीय पूँजीवाद 'संक्रमणकालीन' सिद्ध होगा; क्योंकि इसमें परस्पर विरोधी शक्तियों का समावेश विद्यमान है। उसे आशंका थी कि मिश्रित अर्थव्यवस्था में अन्तोगत्वा या तो पूँजीवादी या समाजवादी शक्तियाँ विजयी होंगी। परन्तु वह जानबूझकर समाजवादी शक्तियों को विजयी बनाना चाहता था। अर्थात नवीन आर्थिक नीति का अंतिम उद्देश्य 'समाजवाद' था। इस लिए नवीन आर्थिक नीति के अन्तर्गत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख केन्द्र (विशाल स्तरीय उद्योग, विदेशी व्यापार, बैंकिंग और परिवहन-प्रणाली, खनिज पदार्थ और विद्युत-उत्पादन) सरकारी स्वामित्व में रखे गए थे। निजी क्षेत्र को केवल लघु उद्योगों, कृषि और घरेलू व्यापार में ही पनपने का अवसर प्राप्त था। पूँजीवादी शक्तियाँ निरंकुश न हो पायें, इसलिए पूँजीवादी शक्तियों को नियंत्रित एवं संयोजित करने की व्यवस्था भी की गई थी।